बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष - 02, अंक-1
मूल्य 10/-

जनवरी 2016

नव वर्ष मंगलमय हो!

किलकारी लाल

मंद पवन ने राग छेड़ा,
समय ने करवट ले ली,
एक उल्लास, संघर्ष के साथ,
नये साल ने दस्तक दे दी।

दोस्तो,

सुबह-सुबह जब आँखें खुलीं तो लगी दुनिया कुछ नई-नई सी...।

वही धरती थी, वही आसमाँ था। पर सुबह कुछ अलग-सी थी। माहौल खुशनुमा-सा था। बागों में फूल वही थे पर भौंरों का गुंजन अलग-सा था।

आखिर क्या था यह? क्या था? क्या था? मैं बताऊँ.... यह नये वर्ष की खुशी थी जो आसमाँ से टपकी और सबके मन में समा गई। देखो समय ने फिर से एक बार करवट बदला और नए साल ने दस्तक दे दिया। समय का तो यह दस्तूर ही है, वह बढ़ता जाता है। पल-पल जोड़कर दिन बन जाता है और दिन गुजरते-गुजरते साल बन जाता है। खट्टी-मीठी यादों से भरे एक लंबे सफर के बाद इस नये सफर की शुरुआत करना है। पिछले साल हमसे कई गलतियाँ हुई होंगी, है न? तो क्यूँ ना हम इस वर्ष के सफर में उन गलतियों को सुधारकर खुद से कुछ वादे करें और उन्हें निभाएँ ताकि जब भी हम अपनी जिंदगी के पन्नों में 2016 का पन्ना पलटें तो हमें कई सारी बेहतरीन यादें, महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ और कुछ ऐसे खास लम्हे मिले जिनके कारण यह साल यादगार बन जाए।

दोस्तो कहते हैं कि मददगार अजनबी रास्तों पर खड़े नहीं मिलते। पर खुशकिस्मत हैं हम, हमारे पास कई ऐसे मददगार हैं जो हर गली हर चौराहे पर हमारी मदद को तैयार खड़े रहते हैं। जानते हो वह कौन है? वही खाकी वर्दी वाले जिन्हें हम डंडे वाले पुलिस अंकल कहते हैं। हममें से कइयों के दिमाग में यह बैठा रहता है कि पुलिस वाले अंकल बहुत खड़ूस हैं। पर यारो इंसान तो वे भी हैं, दिल तो उनका भी कोमल ही होता है। हम अपने आचरण और व्यवहार में सुधार लाएँगे तभी तो हमारा यह साल 'ललनटॉप' गुजरेगा। अच्छा मेरा कहना मानोगे? हाँ तो अपनी आँखें बंद करो और मेरे साथ बोलो, ''थैंक्यू पुलिस अंकल हमें सुरक्षित रखने के लिए,
अपना फर्ज निभाकर हर पल
हमें खुशियाँ देने के लिए।''
नयी साल की शुरुआत,
हमको दे गया नये इरादे
अब ना मोती आँखों से छलके,
खुद से कर लिए वादे।

अभिनंदन गोपाल।

हम बच्चों की किलकारी एक्सप्रेस

किलकारी बिहार बाल भवन की ओर से दूर से आने वाले बच्चों के लिए हर रविवार को नि:शुल्क बस सेवा शुरू कर दी गई है। बस सेवा का उद्घाटन मिस इंडिया इंटरनेशनल, 2015 सुप्रिया ऐनम ने किया। बस कंकड़बाग बाईपास, पटना सीटी बेगमपुर एवं सगुनामोड़ दानापुर से शुरू हो गई। नि:शुल्क बस सेवा से बच्चे काफी खुश है। इस बस का लाभ उन बच्चों को ज्यादा मिलेगी जो अधिक दूरी होने की वजह से बाल भवन भवन नहीं आ पा रहे थे। जो बच्चे किलकारी में नामांकित है। अब बाल भवन आकर वे बच्चे भी ससमय प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

प्रेरक प्रसंग — दोस्ती के हाथ

स्वामी रामतीर्थ जहाज द्वारा जापान से अमेरिका जा रहे थे। जब सैनफ्रान्सिको बन्दरगाह आया, तो सब लोग उतरने लगे, लेकिन स्वामीजी निश्चिन्त भाव से डंक पर टहलने लगे। एक अमरीकी का जब उनकी ओर ध्यान गया, तो उसने पूछा-''महाशय! आपका सामान कहाँ है?''

''मेरे शरीर पर ही है।''

''क्या आपके पास पैसे भी नही है?''

''नहीं,'' स्वामी जी ने उत्तर दिया।

''तब आपका जीवन कैसे चलता है?''

''सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार ही मेरा जीवन है। जब मुझे प्यास लगती है तो पानी मिल जाता है। जब भूख लगती है, तो कोई रोटी का टुकड़ा दे ही देता है।''

''क्या अमेरिका में आपका कोई दोस्त है?''

''हाँ! है क्यों नहीं?एक अमरीकी मेरा दोस्त है, ''और यह कहकर उन्होंने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा-मेरा दोस्त यह है।''

उनके इस आत्मीयतापूर्ण स्पर्श का उस पर जादू सा असर पड़ा। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो उनके साथ उसकी पुरानी मित्रता है। वह एक सच्चे दोस्त की भाँति उनका मित्र हो गया। इसके बाद स्वामी जी जब कभी भी सैनफ्रान्सिस्को आये, उसने उन्हें अपने यहाँ ही सम्मानपूर्ण रखा और उनका बराबर ख्याल किया।

प्रस्तुति- घूँघरू आनंद

विशेष कविता

तालाब में पत्थर फेंकता बच्चा

तालाब के पानी में पत्थर फेंकता है एक बच्चा
और किलक-किलक कर हँसता है
विक्षोभ देखकर
आप कह सकते हैं कि समय काटता है
बच्चे अकेलेपन में
मगर कभी अकेला नहीं होता है बच्चा
हमेशा उसके साथ होती हैं
दुनिया की तमाम अच्छी चीजें
बच्चा रहना चाहता है तितलियों की तरह चंचल
छूना चाहता है आकाश पतंगों की तरह
जगाना चाहता है सोए हुए लोगों को
गहरी नींद से
विक्षोभ पैदा करना चाहता है बच्चा
तालाब के पानी में पत्थर फेंकता हुआ बच्चा
एक दिन इसी तरह जगाएगा
सदी के सोए हुए लोगों को।

-रमण कुमार सिंह

माथापच्ची

यदि एक घोंघा एक गोलाकार रस्ते पर आधी दूरी तयकर वापस मुड़ जाता है और फिर तय की गई दूरी की आधी दूरी तय करता है तो क्या वह वापस वहीं पहुँचेगा जहाँ से उसने चलना शुरू किया था?

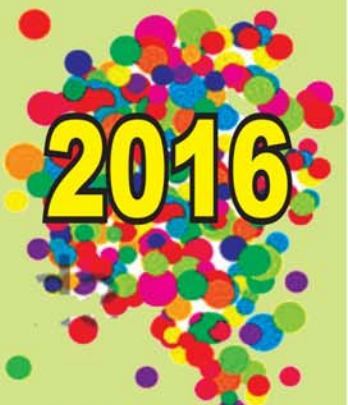

बबलू बबली के चुटकुले

- बबलू-भारत में सबसे ज्यादा बारिश कहाँ होती है?
  बबली-(बहुत देर सोचा) फिर बोली, जी जमीन पर।
- बबली-तुम्हारे दांत नीले क्यों हैं?
  बबलू-क्योंकि आजकल ब्लूटूथ का जमाना है।
- बबलू-छिपकली ने गाना सुनाया तो बाकी दो छिपकलियाँ दीवार से गिर गई बताओ क्यों?
  बबली-क्योंकि वे गाना सुनकर ताली बजाने लगीं।
- बबलू-का रेडियो खराब हो गया। वह उसे ठीक करवाने गया। मैकेनिक बोला-रेडियो में खराबी नहीं है। मौसम खराब है न, इसलिए ठीक से चल नहीं रहा।
  बबलू-तो ऐसा करो, नया मौसम डाल दो।

बुझो-बूझौवल

1. आग में जल जाने से क्या होगा?
2. गाय दूध देती है। मुर्गी अंडा देती है
   वह कौन है जो दूध और अंडा दोनों देती है?
3. वह क्या है जो सुरज से भी ज्यादा गर्म,
   शहद से ज्यादा मीठा है।
   राजा को चाहिए, भिखारी के पास है
   जो खायेगा वह मर जायेगा।
4. आड़ी-तिरछी चलती है
   छेड़ो तो उछलती है
   घर में उसका मान नहीं
   दो आखें है पर कान नहीं
5. तीन पैर की चम्पा रानी
   रोज नहाने जाती थी
   दाल-भात छोड़कर
   कच्ची रोटी खाती थी
6. जितना रोता है
   उतना हीं खोता है।

मेरी खूब बधाई है

नयी खुशियों के साथ, एक होगा नया विचार।
दोस्त में हो दोस्ती, और ढेर सारा प्यार।
कुछ इसी तरह का होगा,
नये साल का नया आगाज।
पर मुश्किल से हमको मिलती,
खुशी नहीं यह सस्ती है।
जमकर होगी पार्टी यारो,
करना खूब ही मस्ती है।
लेकिन अब लेकर संकल्प,
करनी हमें पढ़ाई है।
इस नये वर्ष में सबको, मेरी खूब बधाई है।

-सम्राट समीर, वर्ग-नवम

कहानी

मैंने देखा है

अँधेरी रात बीती और जहाँ पर छा गई नयी सुबह की लालिमा। मैं सुबह हूँ, पहले तो मंदिर की ओर चलती हूँ, पर ये क्या?मुझे लगा था कि ये तो मेरी कदर करेंगे लेकिन पंडित जी ने तो कुछ देर पूजा अर्चना की, मंदिर की घण्टी बजाई बस, चले गये सब। उमड़ी हुई भीड़ कुछ ही देर में खत्म हो गई। सड़क पर लोगों ने आना-जाना शुरू कर दिया। बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार होने लगे। बुजुर्ग टहलने को और बड़े काम पर जा रहे हैं। मैं जिस गली, जिस मोड़ पर भी झाँकूँ तो बस एक चीज आम दिखती है, वह खाकी वर्दी वाला। इनकी वर्दी एक-सी है पर चेहरे अलग-अलग। इसी ने होने वाली भीड़ को रोक रखा है। अपराधी पर नजर टिकाए है और मेरी कदर करते हुए अपनी ड्यूटी कर रहा है। इसीलिए तो मेरी शोभा भी बढ़ रही है। इसकी वजह से सारे बच्चे, बड़े, बुजुर्ग सभी सुरक्षित हैं। एक तरह से ये सुरक्षित हैं तो मैं सुरक्षित हूँ सुबह यानी कि प्रकृति। काश! कि इसकी तरह ही हर इंसान वफादार होता, मेरी कद्र करता तो आज मेरी हवाओं में इतनी गंदगी न फैली होती। एक तरफ उस मोड़ पर वह एक खोयी बच्ची को उसके माँ-बाप से मिला रहा है तो दूसरी तरफ उसने भीड़ को सँभाल रखा है। अरे, यहाँ तो लड़ाई-झगड़ा चल रहा है । पर सुकुन है क्योंकि फिर, उस मोड़ पर भी एक वर्दी वाला तैनात है। मुझे आज भी अच्छे से याद हैं वे दिन। उस दिन सभी के चेहरे पर होली थी, क्योंकि उस दिन होली का त्योहार जो था। मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लग रहा था, क्योंकि उस रोज भी ये वर्दी वाला अपनी ड्यूटी कर रहा था। मुझे उसके चेहरे पर अबीर नहीं बल्कि अपने परिवार की खातिर फिक्र और अपने कर्त्तव्यों की खातिर गर्व दिखलाई पड़ रहा था। जी तो कर रहा था कि मैं इन हवाओं के साथ उसके चारों ओर डंडूल लगाऊँ और उसके कानों में गुनगुनाऊँ जो शायद उसे थोड़ी खुशी और थोड़ी ताजगी दे सके। उस रोज वह इधर-उधर भटकती हुआ हर चीज को निहारता हुआ शायद कुछ ढूँढ रहा था। इस बार उसके हाथों में एक कुले के गले में बँधी सिक्कड़ भी थी। ऐसा लग रहा था कि तभी मेरी हवायें तेजी से पूरे रफ्तार में अपना रूख तय करने लगीं। जैसे धूल मिट्टी और पत्तों के साथ तेज आँधी आने लगी हो। पर आँधी तो ज्यों तीस सेकेंड भी ना रूकी हो। न जाने क्यूँ एक ही पल में फिर से हवाएँ मग्न मस्तानी डोलती हुई निकल पड़ीं। आहिस्ता-आहिस्ता हौले-हौले। पर इन कुछ ही पलों में उस वर्दी वाले की टोपी आँधी से उड़कर एक गाड़ी के नीचे जा गिरी। वह अपने कुत्ते को लेकर पीछे दौड़ा। जब वह गाड़ी के नीचे से अपनी टोपी उठा रहा था। तब न जाने क्यों इसकी नजर किसी चीज पर पड़ी। बारीकी से देखती हुई उसकी नजर साफ बता रही थी कि उसे डर है पर खुद को खोने का नहीं बल्कि अपने वतन अपने लोगों को खोने का। उसमें कई लंबे-लंबे सिलिंडर सेप्स थे जो छोटे और बहुत पतले -पतले भी थे। सबके तार एक दूसरे से जुड़े हुए थे। वह गाड़ी के नीचे लगा हुआ था और तो और टीक! टीक! टीक! की आवाज भी आ रही थी। मैंने थोड़ा दिमाग दौड़ाया तो लगा कि वो शायद टाईम बम हो। उसमें सेट किये गये दस मिनट धीरे-धीरे घटते जा रहे थे। शायद वह उसे बंद करने की कोशिश कर रहा था। अबतक तो दो मिनट खत्म हो चुके थे। तब वह उठा और आस-पास के लोगों को किसी तरह वहाँ से दूर भगाया। उसने अपने कुत्ते को भी दौड़कर दूर चले जाने को कह दिया। इससे पहले कि उसे भागने का मौका मिलता, एक जोर की आवाज आई बम्म् म्म्.....। खों खों.....मुझे भी थोड़ी खाँसी आई एक प्रदूषण-सा फैल गया। शायद बम फट चुका था। उसने आखिरी बार अपना तिरंगा लहराया था। उसे खुशी थी कि उसने अपना फर्ज निभाया। ऐसा लग रहा था कि वह मरा नहीं, बल्कि जी उठा। उसके अंदर में दबी और मेरे अंदर में जगी एक उम्मीद थी। ये कि शायद आज तो वह गुलाल के रंग में रंग जाता। पर उस दिन तो वह देश की खातिर खून के रंग में रंग गया। एक पल को तो मैं भी जैसे दिल से सलामी देना चाहता था। उसने कई लोगों को नई जिन्दगी दी। आज पहली बार किसी के बुलंद इरादे देखकर ऐसी अभिलाषा जगी कि काश ! मैं सजीव होता तो हाथ उठाकर एक सलामी तो जरूर देता। उसके अमर होते ही सबने उस पर फूल बरसाया असीमित खुशियों और रंगों से भर दिया। ये खाकी वर्दी वाला जिस मिट्टी से जन्मा आज उसी मिट्टी में खुद को खाक कर गया। जिस तरह इसकी वर्दी पर ये कुछ सितारे जगमगा रहे हैं न आज रात ये वैसे अनेक सितारों के साथ झिलमिलायेगा। इसपर मिट्टी का लाल खून से लाल होकर चल बसा, फिर से एक रक्षक बनकर आने के लिए। अब तो शायद जब तक इस देश में जान रहेगी उस वीर के चिते में आग रहेगी। उसके चलते ही वह मेरी हवाओं में खुशबू सी छा गई। हमेशा के लिए हर पन्ने हर अध्याय के लिए। दुनिया चाहे उसे जो भी कहे, मैं तो उसे बस यही कहूँगी। वह पुलिस वाला वह वर्दी वाला वो वही था.....माटी का सपूत। खैर मैं ये बताना तो भूल ही गई कि कल जब मैं आऊँगी तो एक नये साल के मुखड़े में। ऐसी सिर्फ एक ही नहीं बल्कि कई घटनायें मैंने देखी हैं। ये वर्दी वाले मिट्टी की कीमत उस दायरे तक समझ लेते हैं जो दायरे हमें कहानियाँ या तो सिर्फ ख्वाबों में दिखे होते हैं। अगर कोई मुझसे पूछे कि क्या तुमने देखा है तो मैं यही कहूँगी हाँ, मैंने देखा है।

-प्रियंतरा भारती, वर्ग-पंचम्

कुछ नया करें

मोजे की गुड़िया

मोजे ! जिसका इस्तेमाल हम अक्सर पहनने में करते हैं, और खराब होने पर हम फेंक देते हैं, किन्तु हमारी बिन्दु दी ने हमें मोजे की अनेक रोचक वस्तुएँ बनाना सिखाई जिसमें से एक मोजे का गुड़िया है, दोस्तो आप सोच रहे होंगे ना कि मोजे की गुड़िया यह कौसे बनता है?नहीं नहीं, सोचिए मत, बहुत ही सरल व आसान है मोजे की गुड़िया बनाना। आप भी इसे अपने घर में बनाइए और घर को सजाइए।

बनाने की विधि-सबसे पहले हमने एक जोड़ा मोजा लिया। फिर मोजे के इलास्टिक को काटा उसमें से धागा निकाल कर हमने लकड़ी के बोर्ड पर लम्बी तरफ से लपेटा एक मोजा खत्म होने के बाद हम पुन: दूसरे मोजे के पलास्टिक को काटें फिर उसी प्रकार आधे मोजे को उसी लकड़ी के बोर्ड पर लपेटा फिर उसके बाद आधे मोजे को एक पुस्तक में लपेटें। मोजे खत्म होने पर हमने जो मोजे के धागे को लकड़ी के बोर्ड पर लपेटा था, उसे निकालें फिर उसके ऊपर हम एक धागे से टोपी को बाँधें। टोपी के नीचे मुँह का आकार देने के लिए मुँह में थोड़ी सी रूई डालें फिर बाँधें। हमने जो टोपी बनाई थी उसे काटें। मुँह के नीचे जो पुस्तक पर हमने मोजे को लपेटा था। उसे डालें फिर गुड़िया का हाथ तैयार हुआ। फिर गुड़िया के फ्रॉक को नीचे से काटें। गुड़िया के मुँह में आँख लगाने के लिए हम दो काली छोटी बिंदी लगाएँ। फिर लाल बिंदी से होंठ बनाएँ। हमारे मोजे की गुड़िया तैयार हो गई।

-सुहानी अग्रवाल

इस नये साल में

नया साल आया है
मिलकर त्योहार मनाना है
अपनी अंदर की बुराइयों को
खुद से दूर भगाना है
इस नये साल में
कहीं तो घूमने जाना है
गंदगी न फैलाकर
भारत को स्वच्छ बनाना है
इस नये साल में
बहुत से पेड़ लगाना है
हम सबको आज मिलकर
पर्यावरण शुद्ध बनाना है।
इस नये साल में
खूब पैसे बचाना है
जरूरत मंदों की मदद करके
तारीफ खूब कमाना है।
इस नये साल में
सुधार व्यवहार में लाना है।
हमें नियम से चलना है,
पूरी तरह बदलना है।

-युवराज सिंह
वर्ग-पंचम

बचत

बचत, बचत, बचत, बचाना है बहुत कुछ।
पानी की बचत, भोजन की बचत,
पैसों की बचत, बिजली की बचत,
समय की बचत, इन सभी पर भी,
अब हमें ध्यान देना है।
जरूरत होगी जितनी,
करेंगे उपयोग उतना।
न जाने कौन-सी,
बुरी आदत है मुझमें।
बचाना चाहूँ फिर भी,
काम न चलता कम में।
इसे बचाने के लिए,
उपाय एक सोच लिया।
नये साल के बहाने,
ऐसा ही संकल्प लिया।

-प्रवीण कुमार, वर्ग-पंचम्

चलो घूमने चलें

कावर झील, बेगूसराय

दोस्तो,

इस बार फिर पटना से बाहर घूमने चलेंगे, बेगूसराय जिला। यहाँ की कावर झील का नाम सुना होगा। तो चलो, इस बार बेगूसराय कावर झील घूमने। बाल किलकारी अखबार कार्यशाला की पूरी टीम योजना के अनुसार पटना जंक्शन पहुँच गये। प्रवीण बोला, ''प्रियंतरा अभी तक नहीं आयी है।'' तुलसी बोली, ''वो देखो। राहुल भी आ गया। संगीता दी ने पहले से ही रेल टिकट लेकर रखे हुए थे। उफ.....! कितनी भीड़, चलो-चलो ट्रेन आ गई। सभी ट्रेन में सवार हो गये। 6 बजकर 35 मिनट में ट्रेन खुली। रास्ते के नजारों को देखते हुए बेगूसराय स्टेशन पहुँच गये। फिर पूरी टीम गढ़पुरा वाली बस से गढ़खोली उतरी। यहाँ से पूरी टीम ढाई से तीन किलोमीटर पैदल गीत गाती झूमती हँसी-ठिठोली एवं किलकारी करती कावर झील पहुँच गई। यहाँ सीताराम भईया पहले से हमलोगों को घूमाने के लिए तैयार थे। इनका घर बेगूसराय जिले में ही है। पूरी टीम का स्वागत करते हुए उन्होंने घूमाना शुरू किया। यहाँ के बारे में बताने लगे। उन्होंने कहा, ''दोस्तो बिहार के बेगूसराय स्थित 'कावर झील' को प्रकृति ने एक अमूल्य धरोहर के रूप में प्रदान किया था, लेकिन आज यह झील लुप्त होने की कगार पर है। बुजुर्ग कहते थे-बारह कोस बरैला, चौदह कोस कबरैला, अर्थात् एक समय था कि बरैला की झील बारह कोस अर्थात 36 वर्ग किमी. में और कबरैला झील चौदह कोस में अर्थात 42 वर्ग किमी. के क्षेत्र में फैली हुई थी।''

इस झील से उत्तरी बिहार का एक बड़ा हिस्सा कई प्रकार से लाभान्वित होता था। ऊपरी जमीन पर गन्ने, मक्का, जौ आदि की फसलें काफी अच्छी पैदावार देती थीं। हजारों मल्लाह इस झील से मछली पकड़ कर अपना जीवन यापन करते थे। झील के चारों ओर के करीब 50 गाँव के मवेशी पालक मवेशियों को यहाँ की घास खिलाकर हमेशा दुग्ध उत्पादन में आगे रहते थे। ग्रामीण लोग झील की 'लड़कत' (एक प्रकार की घास) से अपना घर बनाया करते थे। यह काम आज भी होता है। दिलचस्प बात यह है कि इस झील में एक से बढ़कर एक विषधर सर्प भी रहा करते थे। लेकिन आजतक कोई भी व्यक्ति यहाँ साँप के काटने से नहीं मरा। इसके पीछे एक देवी 'जयमंगल' की शक्ति बताई जाती है, जो विष को भी अमृत बना देती है। झील के साथ ही माँ जयमंगला का मंदिर है। वह देखो, जहाँ आज भी एक बहुत बड़ा मेला लगता है। वह देखो, जो पक्षी दिख रहे हैं, उनका नाम है साइबेरियन पक्षी। यह तो कम देख रहे हो। पहले ज्यादा रहा करते थे। इसी बीच राजू भैया बोले ''ढाई बज चुके हैं। साढ़े तीन बजे ट्रेन है, वापस भी होना है।'' रानी दी बोली, ''अरे...वह देखो कितने सारे बंदर हैं। चलो-चलो इसे मूढ़ी खिलाते हैं।'' सरिता बोली, ''नहीं-नहीं, मुझे बंदर से डर लगता है।'' कहते ही एक बंदर प्रवीण के हाथों से मुढ़ी वाला गट्ठर छीन लेता है और सभी बंदर आपस में झपट-झपट कर खाने लगते हैं। पूरी टीम बेगूसराय स्टेशन पहुँच गई। तीन बजकर 40 मिनट में ट्रेन खुली। पूरी टीम पटना पहुँच गयी।

प्रस्तुति-मुनटुन राज, वर्ग -दशम्

खोजबीन

हम पलक क्यों झपकाते हैं?

दोस्तो! हमलोग औसतन हर छः सेकेंड में एक बार पलक झपकाते हैं। इसका अर्थ है कि हर व्यक्ति अपने जीवन-काल में लगभग 25 करोड़ बार पलक झपकाता है। पर जानते हो पलक झपकने की क्रिया क्यों होती है?

पलक झपकने की क्रिया में हमारी पलकें आँखों की मांसपेशियों द्वारा ऊपर-नीचे गति करती रहती हैं। ऊपर की पलकों की नीचे छोटी-छोटी अश्रु ग्रंथियाँ होती हैं। जैसे ही हम पलक बंद करते हैं, वैसे ही इन ग्रंथियों से एक नमकीन द्रव निकलता है। यही द्रव हमारी आँखों को गीला रखता है। जब यह द्रव अधिक मात्रा में निकलता है तब आँसुओं का रूप धारण कर लेता है। और पता है पलक झपकने से आँखों की रक्षा भी होती है। अब कोई धूल का कण या जलन पैदा करने वाला पदार्थ आँख में चला जाता है, तब पलक झपकाने में निकलने वाला द्रव पदार्थ आँखों की सफाई का काम करता है। और धूल के कण या जलन पैदा करने वाले पदार्थ इसी ट्रक के साथ बाहर आ जाते हैं। इस प्रकार पलक झपकाने से हानिकारक कण आँखों से बाहर आ जाते हैं।

हमारा संकल्प

साल 2016 आया है भाई
हमें नया कुछ करना है
लिया संकल्प हमने कि
आगे ही आगे बढ़ना है
खुदा हमें समझाए मम्मी
नहीं व्यर्थ बहाओ पानी
हुआ खत्म अगर धरती से
मिट जाएगी ये जिन्दगानी।
नहीं उगे पेड़-पौधे
हो जाएँगे खेत वीरान
हरी-भरी धरती हमारी
बन जाएगी रेगिस्तान।
हरियाली जहाँ पर बसती
वही होती वर्षा भारी
छमा-छम बूँदो से
खुश होती प्रकृति सारी
हरी-भरी हो यह धरती
वृक्ष हम खूब लगाएँगें
पानी है अनमोल रत्न
एक-एक बूँद बचायेंगे।

-रिशु रानी, वर्ग-नवम

नन्हें कलाकार

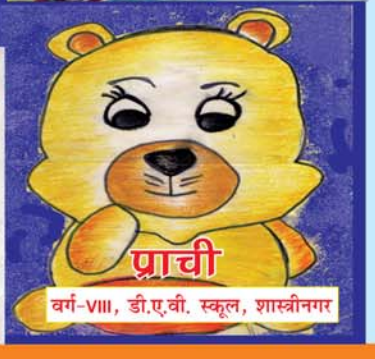

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015]

कैमरे में किलकारी

किलकारी एक्सप्रेस बस की सेवा शुरू

भृगु बाल विज्ञान मेला

किलकारी में 'क्रिसमस डे'

वार्षिक बच्चा बैठक

खेल

पर्ची लुटो, शब्द बनाओ

आओ खेलो! एक मजेदार खेल। खेल का नाम है 'पर्ची लुटो, शब्द बनाओ।' इस खेल में जितने चाहे उतने बच्चे खेल सकते हैं। सबसे पहले कागज की छोटी-छोटी पर्चियों में अक्षर या शब्द लिखकर उन्हें मोड़ दें। पर्चियों को किसी प्लेट में रखकर बच्चों के बीच में रख दें। अब सभी बच्चे गोलाकार में बैठेंगे। फिर मजेदार-सी आवाज में खेल खेलाने वाला बोलेगा,-''पर्ची लुटो, शब्द बनाओ'' तो सभी बच्चे एक-एक करके एक पर्ची लेंगे और अपने स्थान पर बैठ जायेंगे और पर्ची खोलकर देखेंगे जो भी अक्षर या शब्द मिले, उससे बच्चे को शब्द या वाक्य बनाना है। है न मजेदार खेल! अपने साथियों के साथ खेलो। फिर तैयार रहना एक नया खेल खेलने के लिए।

-सुधीर

नया साल आया

''अरे वाह! आज कितनी प्यारी सुबह है।'' सृजन अँगड़ाई लेते हुए बरामदे में गया।'' ओ चिड़िया रानी, तुम्हें नया साल मुबारक। चलो नीचे जाता हूँ। अरे, नहीं, नही अभी जाऊँगा तो डाँट पड़ेगी तो क्यों न पहले होमवर्क कर लूँ।'' सृजन ने तुरंत अपना होमवर्क कर लिया और थोड़ी-सी अलग से पढ़ाई भी कर ली। सृजन बहुत खुश हो गया और ''माँ-माँ-पापा-पापा'' चिल्लाते हुए नीचे भागा। उसने किचन, बेडरूम, आँगन, सब जगहों पर देखा लेकिन उसे उसके माता-पिता नहीं मिले। दीदी ने उसे रोते हुए देखा तो अपने पास बगीचे में बुला लिया और चुप करवाया। दीदी ने सृजन के रोने का कारण पूछा तो उसने बताया, ''दीदी आज नया साल है, पर हम घूमने नहीं जा रहे हैं, मेरे सारे दोस्त अपने परिवार के साथ घूमने गए हैं।'' दीदी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया ''देख सृजन माँ पार्लर गई है। पापा गोल्फ खेलने गए हैं। इस साल माँ सुंदर दिखना चाहती है और पापा गोल्फ सीखना चाहते हैं। वे दोनों अपने-अपने तरीके से नया साल मना रहे हैं। तो क्यों न हम भी अपने तरीके से नया साल मनाएँ। पर दीदी हम करेंगे क्या?'' ''देख सृजन, मैं किसी को नया जीवन दान दे रही हूँ।'' पर तुम तो पौधा रोप रही हो।'' सृजन ने आश्चर्य से कहा,-''अरे सृजन। पौधे में भी हमारी तरह जान होती है। जब उसे उसका खाना यानी धूप और पानी न दिया जाए तो वह सूख के मर जाएँगे। बिल्कुल हम इंसानों की तरह'' दीदी ने सृजन को बताया।

सृज़न बहुत खुश हो गया और ढ़ेर सारे पौधें को रोपा। सृज़न और दीदी ने बहुत सारे जीवनदान दिए। सृज़न अब बहुत थक गया था तो वह सो गया। साथ-साथ दीदी भी सो गई। जब सृज़न सुबह में उठा तो उसे तो बहुत अच्छी खाने की खुशबू आ रही थी। उसने दीदी को उठाना चाहा, पर दीदी तो वहाँ थी ही नहीं। वह पनीर की सब्जी, मशरूम के कबाब और चाऊमीन मंचूरियन को सजे हुए देखा। साथ में उसने अपना पूरा परिवार और दादा-दादी को भी देखा। उसका जन्मदिन रहा। सृज़न को सभी ने हैप्पी बर्थडे कहा। सृज़न को फिर पता चला कि जानबूझ कर दीदी ने सृज़न के बर्थडे पर वृक्षारोपण करवाया पापा-माँ भी क्लब और पार्लर नहीं, दादा -दादी को लेने और खरीदारी करने गए थे।

-सृष्टि कुमारी, वर्ग-अष्टम्

जुनून और दम

इस नये वर्ष में, संकल्प लिए हैं हमने।
खेलेंगे-कूदेंगे पढ़ेंगे, किस्मत होगी सामने।
विद्या धन सर्व धन प्रधानम्,
विद्या लेकर बनेंगे बड़े विद्वान।
दूसरो को बाँटेंगे भी
खुद भी लेंगे आत्म ज्ञान।
उन बच्चों के आँगन करेंगे रौशन,
गरीबों के आँसू पोछेंगे हम।
उनमें भी नयी राह के लिए,
भरेंगे जोश, जुनून और दम।
कर लिये हैं खुद से वादे
होंगे मजबूत हौसले मजबूत इरादे
ऐसा ही उदय होगा इस नये वर्ष का
जो बनेगा प्रतीक दिलों के हर्ष का

-प्रतीक कुमार, वर्ग-पंचम!

यही हमारी पहचान है।

यही हमारी पहचान है,
यही हमारी पहचान है।
उगते यहाँ पर गेहूँ-मक्का,
उगता यहाँ पर धान हैं,
यही हमारी पहचान हैं
है यहाँ पर 29 राज्य,
पर एक ही हिन्दुस्तान है,
यही हमारी पहचान हैं।
इस देश में जन्में वीर नेता,
यही देश वीरों की खान है,
यही हमारी पहचान है।
यहाँ पर जन्में राम-कृष्ण हैं,
यहाँ जन्में वीर हनुमान हैं,
यही हमारी पहचान है।
यहाँ बहती गंगा-सी नदियाँ,
हिमालय सी चट्टान है,
यही हमारी पहचान है।
बापू-गाँधी नींव हैं इसकी,
चाचा नेहरू जान हैं,
यही हमारी पहचान है।
बना भीम की गद्दा यहाँ पर,
अर्जुन का तीर-कमान है,
यही हमारी पहचान है।
राष्ट्र गीत है 'वन्दे मातरम्',
'जन-गण-मन' राष्ट्र गान है,
यही हमारी पहचान है।
धरती अपनी भारत माता
हम सब इसपे कुर्बान हैं,
यही हमारी पहचान है।
दुनियाँ में है कई देश मगर,
हमारी भारत महान है,
यही हमारी पहचान है।

-राज ऋषभ, वर्ग-आठवाँ

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

-बाल सम्पादक मंडल

इस अंक के प्रतिभागी-
राहुल, सृजन, सृष्टि, युवराज, स्वाति, मो. राजा, गौरव, मुनमुन, रीशु, पूजा, मोनिका, दीपा, प्रशांत, अभिषेक, रौशन
युवराज-(i-ii) शीतल, वैष्णवी, सन्नी, निरंजन, ज्योति ।
बाल सम्पादक-सम्राट, अभिनंदन, प्रवीण, प्रियंतरा, तुलसी, घुँघरू, मुनटुन,
संपादक-ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी, पटना
कार्यकारी सम्पादक-राजीव रंजन श्रीवास्तव
संयोजक- सुधीर कुमार
कार्यालय- बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब बुझो-बूझौवल

1.आग बुझ जायेगी, 2. दुकानदार, 3. कुछ नही, 4. सांप, 5. चकला, बेलन, 6. मोमबती

माथापच्ची

हाँ, क्योंकि रास्ता गोल है।

वेबसाइट: www.kilkaribihar.org

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar